Epitome : International Journal of Multidisciplinary Research
ISSN : 2395-6968

# हिंदी दलित कविता में मानवीय संवेदना

**प्रा.डॉ.सुभाष ना.क्षीरसागर**
हिंदी विभाग प्रमुख
बहिर्जी स्मारक महाविद्यालय
बसमतनगर जि.हिंगोली.

**RESEARCH PAPER**

हिंदी दलित काव्य आंदोलन के संदर्भ में विद्वानों मे मतभिन्नता है | तथागत गौतम बुध्द ने जिस समतामुलक चिंतनधारा का बीजवपन किया वही चिंतनधारा कबीर, महात्मा फुले एवं दलितों के मसिहा डॉ. बाबासाहेब अम्बेडकर जैसे परिवर्तनवादी चिंतको के कारण वर्तमान युग में फल फुल रही है | इसी चिंतन के तहत जो साहित्य लिखा गया, वह दलित साहित्य के रुप में जाना जाता है| दलितो के प्रति केवल साहानुभूती प्रकट करना इस साहित्य का उद्देश नही बल्की दलित जीवन को पीडा और वेदना से मुक्त कराने के लिए उन्हे जागृत करना इस साहित्य का उद्देश है | दलित वर्ग का पक्षघर बनकर उनके जीवन को स्पष्ट रुप से चित्रित करने का काम दलित रनाकार ही कर सकता है | इस संदर्भ में डॉ.पाण्डेय का कथन है, "सच्चा दलित साहित्य वही है, जो दलितों के बारे में स्वयं दलित लिखेगें | जब अपने समूदाय के जीवन के यथार्थ अनुभवो के बारे में कोई दलित लिखता है, तब उसकी दृष्टी में जो आग, भाषा में जो ताकत, भावों में जो आक्रोश,विद्रोह होता है, वह गैर दलितों द्वारा दलितो के बारे में लिखे गए साहित्य में नहीं होता |"

हिंदी साहित्य में दलित जीवन के संदर्भ में लेखन करने की परंपरा प्राचीन है | आरंभिक काल में सिदघों और नाथों की रचनाओं में दलित जीवन का चित्रण प्रखर रुप में हुआ है | चौरासी सिदंघो में से सैतिस सिदध शुद्र वर्ण् से संबंधित थे | वे वर्ण व्यवस्था का शिकार बने थे | इसलिए उन्होंने वर्णव्यवस्था और ऊंच-नीच और ब्राम्हण धर्म के कर्मकांडो पर प्रहार किया है | राहुल सांकृत्यायन ने सरहपाद नामक सिदध कवि को हिंदी का पहला कवि कहा है | उनके काव्य में प्रखर दलित चेतना दिखाई देती है | एक स्थल पर सरहपाद ने वर्ण व्यवस्थानिर्माण करनेवाली

ब्राम्हणी प्रवृत्ती के संदर्भ में कहा है - ब्राम्हंण ब्रम्हां के मुख से जब पैदा हुए थे | अब तो वे भी वैसे ही पैदा होते है जैसै अन्य लोग | तो फिर ब्राम्हंणत्व कहाँ रहा | यदि कहो कि संस्कारो से ब्राम्हणंत्व होता है तो चांडाल को अच्छे संस्कार देकर ब्राम्हंण क्यों नहीं बना डालते ? यदि आग में घी डालने से मुक्ती होती है तो सबको क्यों नही डालने देते ? होम करने से मुक्ती होती है या नही, धुआँ लगने से आँखो को कष्ट जरुर होता है |

ब्राम्हंण न जानते भेद | यों ही पढे ये चारों वेद |

मट्टी, पानी कुश लेई पठन्त | घर ही बैठे अग्नी होमंत |

मध्ययुग में कबीर और रैदास जैसे कवियों ने दलित चेतना को सामाजिक परिवर्तन से जोडकर अधिक प्रभावी बनाया है | कबीर मध्ययुग के एक सशक्त क्रांतिकारी सुधारक रहे है | उन्होंने दलित, पीडित, शोषित समाज को बुध्द दर्शन का सन्देश देते हुए उनके जीवन उदधार की बात कही है | ब्राम्हंणवादी चिंतकोने कबीर की क्रांतिदर्शी विचारधारा को अध्यात्मिक अंग में फँसाकर उनकी तीव्रता को कम करने का प्रयास किया ताकि उनके ब्राम्हणवाद पर कोई आँच न आए बुध्द ने हिली बार वैदिक परंपरा की धज्जिया उडाई, इसलिए ब्राम्हणवादीयोंने उनकी शक्ती को बिखराने हेतु बुध्द को विष्णु का नौवां अवतार बनाया,जिस बुध्द को अवतार की अवधारना ही मान्य नहीं | उसी ढंग से कबीर को भी राम का भक्त बनाना, रामानंद का शिष्य कहना, यह उनके विचारों को विकृत करने का काम है | डॉ. बाबासाहब अंबेडकर ने कबीर को अपना गुरु माना तब से बहुजन समाज की कबीर की ओर देखने की दृष्टी बदलचूकी है | वास्तव में कबीर बौध्द दर्शन के प्रसारक रहे है | अत:वे हिंदी के पहले दलित कवि हैजिन्होनें दलितों के उत्थान के लिए अपना लेखन किया | कबीर जैसी प्रचलित व्यवस्था के प्रति चुनौतियाँ निर्माण करनेवाली शैली उनके समकालिनों में नही थी | उन्होने चातुर्वण्य व्यवथा का धिकार कर वर्णव्यवस्था को बनाए रखनेवाले ब्राम्हणी प्रवृतियों को निम्नलिखीत शब्दों मे फटकारा है-

जो तू बामन बामनी जाया, आन बाट ऱ्हवे क्यों नहि आया |

जो तू तुरक तुरकनी जाया, तो भीतर खतना क्यो न कराया |

आधुनिक काल में अंग्रेजी शिक्षा के प्रसार के कारण व्यक्ति अपने प्रति, अपने परिवेश के प्रति अधिक सजग हुआ | उसी समय हिंदु समाज में सुधार लाने हेतु कई धार्मिक तथा सामाजिक आंदोलन निर्माण हुए (ब्रम्होसमाज, प्रार्थना समाज, आर्य समाज.) इन हिंदु सुधारको ने वेदों को प्रमाण मानकर जन्माधिष्ठित वर्ण व्यवस्था को नकार कर कर्माधिष्ठित वर्ण व्यवस्था की स्थापना की है | लेकीन वे समुल वर्णव्यवस्था के विरोधी नहीं थे | इन्ही आंदोलनो के प्रभाग स्वरुप हिंदी काव्य में दलितों के संदर्भ में कविताएँ लिखी गई | जिसमें मैथीलीशरण गुप्त, शियारामशरण गुप्त,निराला, पंत, दिनकर, रामकुमार वर्मा जैसे कवियों के नाम लिए जा सकते है | इन कवियों ने दलित वर्ग की समस्याओं का विवेचन किया | इनके काव्य दलितो के उत्थान के लिए नहीं लिखे | इन्होंने दलितों की वेदना को निवेदन के रुप में प्रस्तुत किया | दलितों की पीडा या वेदना को नष्ट करने के लिए संघर्षात्मक रवैया उनमें नही था |इनके लेखन से दलितों में

स्वाभीमान,विद्रोह या क्रांति की भावना उभर नहीं पाई | मैथिलीशरन गुप्त ने जैसे स्त्री को अबला के रुप में चित्रित किया वैसे दलित को भी अनुरक्ती बढाने का उपदेश किया है -

ब्राम्हण बढावे बोध को, क्षत्रिय बढावै शक्ती को
सब वैश्य निज वाणिज्य को, त्यों शुद्र भी अनुरक्ती को
X X X X X X X X X
जब मुख्य-वर्ण द्वीजातीयों का हाल ऐसा है यहाँ
तब क्या कहे, उस शुद्र कुल का हाल कैसा है यहाँ ?

प्रगतिवादी काव्य में शोषित, पीडीत समाज के कल्याण के लिए विद्रोहात्मक स्वर प्रस्फुटित हुआ | पुंजीवादी व्यवस्था के विरोध में आक्रोशमयी भावना इन कवियों ने व्यक्त की है | जिसमे जनकवि नागार्जुन का योगदान महत्वपुर्ण है | नागार्जुन श्रीलंका में जाकर बौध्द धर्म की दीक्षा ली | दलित, पीडीत, शोषित जीवन में चेतना भरने का का काम उन्होनेकिया है | नागार्जुन न भुमीहीन , अछुत और जमींदारों के बीच होनवाले संघर्ष को अपनी कवितामें प्रस्तुत किया है | जामीदारो की कृपापर चलनेवाले भुमीहीन दलित लोग हमारे देश में अधिक संख्या में है | एक बस्ती के अछूत (चमार) की दुर्दशाका चित्रण करके कवि ने संपुर्ण समाज में फैली अव्यवस्था और अन्तविरोध का रेखांकन किया है | अपने अधिकारों से वंचित सात दलित लोंगो पर जब आब्र बचाने की समस्या आती है तब उनकी पत्नीयों ने भी संघर्ष में हिंस्सा लिया |

सातों के सातों चमार थे, अति दरिद्र थे भुमिहीन थे
करते थे मेहनत मजदुरी, मालिक लोगों के अधिन थे
भुमिहरण् बर्दास्त कर गए चुपी सार्धी मार-पीट पर
गुस्सा तब भडका बहुओं का, इज्जत जब लुटी घसीटकर

फिर तो वे सातों के सातों बने भेडिया बाघ हो गए |

भारतीय स्वतंत्रता के पश्चात संविधान के प्रजातांत्रिक मुल्यो, तथा 1956 की डॉ. बाबासाहेब अंबेडकर की धम्म क्रति के कारण भारत वर्ष में जागृत्ती निर्माण हुई | डॉ. अंबेडकरने अपने कार्यकार्ताओं को सृजनात्मक क्षेत्र में कार्य करने के लिए प्रेरित किया | परिणाम स्वरुप मराठी में दलित साहित्य के सामाजिक, आथिक, राजतिक परिवर्तन के लिए लिखा जाने लगा | यहाँ की सांस्कृतिक रुढी, परंपरा और उससे निर्मित मानसिकता ने दलित जीवन को अपमान, द्रवैश, घ्रणा, पताडना को झेलने के लिए मजबुर किया और उनका जीवन वेदना,पीडा और दुखो से भर दिया था ऐसी मनुवादी व्यवस्था को चुनौति देते हुए हिंदी का दलित कवि भी विद्रोही और स्वाभीमानी स्वर में अपनी बात करने लगा| आठवे तथा नौवे दशक की हिंदी कविता में दलित चेतना प्रखर रुप मे चिंत्रीत हुई है | ओमप्रकाश वाल्मिकी दलित जीवन को पूरी अनुभूति के साथ प्रकट करनेवाले चर्चित दलित कवि है | जिस जातिव्यवस्था ने दलित वर्ग को युगो-युगो से गुलाम बनाकर उनका शोषणकिया है उस व्यवस्था के संदर्भ में वाल्मीकी अपना आक्रोश प्रकट करते है -

न जाने किस हराम जादे ने
तुम्हारे गले में बांध दिया जाति का फंदा

जो न तुम्हे जीने देता है न हमें |...

वर्तमान युगीन दलित कविता में मात्र शिकायत का स्वर नहीं है | बल्की सवर्ण समाज और उसकी संस्कृति के मूल्यो और मान्यताओं के अस्वीकार की अभिव्यक्ती है | और उस पर तीखा आक्रमण भी हो रहा है | डॉ प्रेमशंकर की कविता दृष्टव्य है -

सारी सुविधाएँ एक समुह की,
सारी विवशताएँ एवं उपेक्षाए
सिर्फ हमारे सीने पर | टाक दी गई |
सामाजिक न्याय से अधिक | हमें मानसिक न्याय चाहिए |
आखिर कब आकर कोई | इस स्वार्थरहित मशाल को थमेंगा |

हिंदी का दलित काव्य दलितों के जीवन में परिवर्तन की अपेक्षा लेकर लिखा जा रहा है | स्वतंत्रता, न्याय, बंधुत्व के मूल्यो पर आधारित सामाजिक व्यवस्था की स्थापना करना यह इस काव्य का लक्ष्य है | अन्याय, अपमान, शोषण के विरुध दलित साहित्य में विद्रोह और आक्रोश का स्वर है | संघर्ष उनकी नियती है तो विद्रोह उनकी प्रकृति है | मोनदास नैमिशराय जैसा दलित कवि क्रांति के हथौडे को इन जडवत व्यवस्था पर सदा के लिए चलायमान रखना चाहता है |

क्रांति का हथौडा रुकने न पाये |
राजमहलों की दीवारों के आस-पास
जहाँ का राजा बहरा है
या फिर शायद गुँगा |

हिंदी का दलित काव्य दलितों के सामाजिक, आर्थिक, सजनीतिक सभी प्रकार के शोषण से मुक्ती का उदघोष करता है | यह परंपरागत रुढियों एवं आंडबरो के खिलाफ तथा उन सभी मूल्यों और विस्वासो तथा मान्यताओं को नष्ट करके दलित जीवन को शोषण से मुक्त करना चाहता है | इन कवियों पर तथागत गौतम बुध्द एंव डॉ बाबासाहब अंबेडकर के चिंतन का गहरा असर है | बुध्द ने हिंदु धर्म की आत्मा, परमात्मा, स्वर्ग-नरक, भाग्यवाद जैसी अवधारना के अस्तित्व को अस्वीकार किया था | हिंदी के दलित कवि भी इन अवधारनाओं का विरोध करते है | दलितों की शोषण से मुक्ति कराने के लिए उसे क्रांती के लिए सजग करते है | कवि कुसुम वियोगी की काव्य पंक्तियाँ दृष्टव्य है-

स्वर्ग नरक और भाग्यवाद में जब तक समय गंवायेगा |
पराधिनता के बंधन से मुक्त नही हो पायेगा |
हँसिया और हथौडा तेरा काम और कब आयेगा ?
मेहनतकश तु जाग उठा तो इंकलाब आ जायेगा |

प्रारंभिक युग में दलित साहित्य का लेखन अधिक मात्रा में नहीं था | लेकीन वर्तमान युग में हिंदी का दलित काव्य लेखन व्यावक रुप धारण कर चुका है | अर्थाभाव के कारण कई रचनाएँ प्रकाशित नहीं हो पा रही है | चंद दिनों के बाद जब दलित कवियों की रचनाएँ प्रकाशित होगी तब यह काव्य साहित्य मराठी के जैसे हिंदी में भी एक नई साहित्यिक क्रांति करेगा | पुरे हिंदी जगत

का ध्यान अपनी ओर आकृष्ठ कराने के जैसी जिवंतता इस साहित्य में है | इसलिए हिंदी का दलित साहित्य हिंदी भाषा की एक महान धरोहर है |

## संदर्भ ग्रंथ


1. हिंदी दलित साहित्य रचना और विचार : रमनिका गुप्त
2. दलित चेतना और समकालीन हिंदी उपन्यास: डॉ मुन्ना तिवारी
3. हिंदी साहित्य का इतिहास : डॉ.माधव सोनटक्के
4. आधुनिक हिंदी साहित्य का इतिहास :डॉ.सुर्यनारायण रणसुभे
5. प्रेमचंद साहित्य में दलित चेतना : डॉ.बलवंत साधु जाधव
6. संचारिका-पत्रीका(अंक दसवी) :संपा.डॉ.माधव सोंनटक्के
7. हिंदी मे दलित साहित्य :डॉ. शत्रुघ्न कुमार